एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ब्रायलर मुर्गी पालन से कमाए अच्छी आय

(*भव्या पाल, दशरथ सिंह चुण्डावत एवं केशराम मीणा)
पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: palbhavya2308@gmail.com

भारत में ब्रायलर मुर्गी पालन बेरोजगारी दूर करने का सबसे बड़ा साधन है ।इस व्यवसाय को पढ़े लिखे नौजवान युवक अपना रहे हैं तथा अपने आय का एक अच्छा जरिया बना रहे हैं। यह व्यवसाय बहुत ही तेजी से बढ़ रहा है। अगर कोई भी पशुपालक इस को व्यवस्थित तरीके से करता है तो इसमें घाटा होने की सम्भावना बहुत कम होती है। कोरोना काल के बाद यह व्यवसाय अन्य कृषि आधारित व्यवसाय में सबसे तेजी से बढ़ रहा है और इसको पढ़े लिखे लोग अपना रहे हैं। भारत में पोल्ट्री फार्मिंग में ब्रायलर चिकन सबसे लोकप्रिय पक्षी है, इन मुर्गियों का पालन माँस उत्पादन के लिए किया जाता हैं।

ब्रायलर छोटी मुर्गीयां होती हैं जो 5 से 6 सप्ताह की होती हैं । ब्रायलर प्रजाति के मुर्गा या मुर्गी अंडे से निकलने के बाद 40 से 50 ग्राम के ग्राम के होते हैं जो सही प्रकार से दाना– दवा खिलाने और सही रख–रखाव के बाद के बाद 6 हफ्ते में लगभग 1.5 किलो से 2 किलो के हो जाते हैं। आज ब्रायलर पोल्ट्री फार्मिंग एक सुविकसित व्यवसाय के रूप में उभर चूका है ।

महत्वपूर्ण जानकारियां

ब्रायलर मुर्गी पालन करने के लिए पहले इसे छोटे स्तर के रूप शुरू करें। फिर बाद में बड़े पोल्ट्री फार्म में विकसित करें। चूजे हमेशा विश्वसनीय और प्रमाणित हेचरी यूनिट से ही लें। हमेशा उच्चतम गुणवत्ता वाले और अच्छी कंपनी की दवा और टीका का प्रयोग करें। ब्रायलर मुर्गी पालन मजैविक सुरक्षा के नियम का पालन करें।

1. **जगह का चुनाव करना:** मुर्गी पालन के लिए सही जगह का चुनाव करना आवश्यक हैं । जगह समतल हो और कुछ ऊंचाई पर हो, जिससे की बारिश का पानी न जा सके। मुर्गी पालन की जगह आवासीय क्षेत्र व मुख्य सड़क से दूर होनी चाहिए। मुख्य सड़क से बहुत अधिक दूर भी न हो जिससे की आने जाने मे परेशानी ना हो। बिजली व पानी की उचित सुविधा उपलब्ध होना चाहिए. मुर्गियों के शेड व बर्तनों की साफ सफाई नियमित रूप से करते रहें. चूजे, दवाई, वैक्सीन, एवं ब्रायलर दाना आसानी से उपलब्ध हों। फार्म की लंबाई पूरब से पश्चिम की ओर होना चाहिए। एक शेड में केवल एक ही ब्रीड के चूजे रखने चाहिए।
2. **ब्रायलर पोल्ट्री फार्म के लिए आवास का निर्माण:** आवास हमेशा पूर्व–पश्चिम दिशा में होना चाहिए और शेड के जाली वाला हिस्सा उत्तर–दक्षिण में होना चाहिए जिससे की हवा सही रूप से आवास के अन्दर से बह सके और धुप अन्दर ज्यादा ना लगे। आवास की चौड़ाई 30–35 फुट और लम्बाई जरुरत के अनुसार आप रख सकते हैं. ब्रायलर पोल्ट्री फार्म आवास का फर्श पक्का होना चाहिए। पोल्ट्री फार्म आवास की साइड की ऊँचाई फर्श से 8–10 फूट होना चाहिए और बीच की ऊँचाई फर्श से 14–15 फूट होना चाहिए । आवास के अन्दर मुर्गी दाना व पानी के बर्तन, पानी की टंकी और बिजली के बल्ब की उचित व्यवस्था होनी चाहिए. आप चाहे तो लबे आवास की बराबर भाग मे बाट सकते हैं ।
3. **ब्रायलर चूजे के लिए दाना और पानी की व्यवस्था:** प्रत्येक 100 चूजों के लिए कम से कम 3 पानी और 3 दाने के बर्तन होना बहुत ही आवश्यक है। दाने और पानी के बर्तन आप मैन्युअल या

आटोमेटिक किसी भी प्रकार का इस्तेमाल कर सकते हैं। मैन्युअल बर्तन साफ करने में आसान होते हैं लेकिन पानी देने में थोडा कठिनाई होती है, पर आटोमेटिक वाले बर्तनों में पाइप सिस्टम होता है जिससे टंकी का पानी सीधे पानी के बर्तन में भर जाता है ।

4. **लिटर प्रबंधनः** ब्रायलर पोल्ट्री फार्म में जो फर्श पर बिछावन की जाती हैं उसे हम लिटर कहते हैं। बुरादा या लिटर के लिए आप लकड़ी का पाउडर, मूंगफली का छिल्का या धान का छिल्का का उपयोग कर सकते हैं। चूजे आने से पहले लिटर की 3–4 इंच मोटी परत फर्श पर बिछाना आवश्यक है। लिटर पूरा नया होना चाहिए एवं उसमें किसी भी प्रकार का संक्रमण ना हो ।
5. **चूजो की ब्रूडिंगः** जिस प्रकार मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे रखकर गर्मी देती हैं उसी प्रकार हम कृत्रिम रूप से चूजों को तापमान देते हैं उसे ब्रूडिंग कहते हैं । चूजों के सही प्रकार से विकास के लिए ब्रूडिंग सबसे ज्यादा आवश्यक है। ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार पूरी तरीके से ब्रूडिंग के ऊपर निर्भर करता है. अगर ब्रूडिंग में गलती हुई तो आपके चूजे 7–8 दिन में कमजोर हो कर मर जायेंगे. या आपके सही दाना के इस्तेमाल करने पर भी उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा।
6. **ब्रायलर मुर्गी भोजन की जानकारीः** ब्रायलर फार्मिंग में 3 प्रकार के दाना की आवश्यकता होती है। यह दाना ब्रायलर चूजों के उम्र और वजन के अनुसार दिया जाता है।

प्री स्टार्टर :0–10 दिन तक के चूजों के लिए
स्टार्टर :11–20 दिन के ब्रायलर चूजों के लिए
फिनिशर :21 दिन से मुर्गे के बिकने तक

मुर्गी पालन में सबसे ज्यादा खर्च उनके दाने पर होता है। दाने में प्रोटीन और इसकी गुणवत्ता का भी ध्यान रखना जरूरी है। इसके अलावा आप चूजों को मक्का, सूरजमुखी, तिल, मूंगफली, जौ और गेंहू आदि को भी दे सकते हो।

7. **पक्षियों का टीकाकरणः** मुर्गियों मे बीमारी से हर साल मुर्गीपालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ता हैं। बीमारियों से बचाव के लिए समय समय पर टीकाकरण करना बहुत जरूरी हैं। कुछ टीकाकरण जो हैच के पहले दिन से से 28वे दिन तक लगाए जाते हैं–

बीमारी का नाम	उम्र (दिन मे)	डोज	रूट
मरेक्स	1	0-20 मि. ली.	खाल मे
रानीखेत (लासोटा)	7	एक बूंद	आँख मे
गम्बोरो	14–18	–	पीने के पानी मे
रानीखेत (लासोटा)	28	एक बूंद	आँख मे
रानीखेत(आर टु बी)	70	0-50 मि. ली.	आँख मे